Topic 61

अजन्त नपुंसक इकारान्त शब्द

इकोऽचि विभक्तौ ।

इगन्तस्य नुम् अचि विभक्तौ । वारिणी । वारीणि

'न लुमता –' इत्यस्यानित्यत्वात् पक्षे सम्बुद्धि-निमित्तो गुणः – हे वारे, हे वारि ! आङोनाऽस्त्रियाम् – वारिणा – 'वेर्डिति' इति गुणे प्राप्ते –

वा० दृङ्ग्रौत्वतृज्वद्भावगुणेभ्यो नुम् पूर्वविप्रतिषेधेन ।

वारिणे । वारिणः २ । वारिणोः २ । 'नुमचिरे' – इति नुट् – वारीणाम् । वारिणि । हलादौ हरिवत् ।

अजादि विभक्ति परे होने पर इगन्त नपुंसक का अवयव 'नुम्' होता है, मिदचोऽन्त्यात् परः परिभाषा से नपुंसक के अन्त्य अच् के आगे 'नुम्' होगा और वह अंग का अवयव समझा जायेगा । उदाहरण के लिए 'वारि+औ' में 'औ' को 'शी' आदेश हुआ और तब अजादि विभक्ति 'ई' परे होने पर इगन्त अङ्ग 'वारि' को 'नुम्' आगम होकर 'वारिन्+ई' रूप बनेगा । वहाँ पर 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' से णत्व होकर 'वारिणी' रूप सिद्ध होगा ।

अस्थि-दधि-सक्थ्यक्ष्णामनङुदात्तः ।

स्यादौ ।

अजादि तृतीया आदि विभक्तियों के परे होने पर अस्थि, दधि, सक्थि और अक्षि शब्दों के स्थान पर अनङ् आदेश होता है और वह उदात्त होता है । अजादि तृतीया आदि विभक्तियाँ आठ हैं – टा, ङे, ङसि, ङस्, ओस्, आम्, ङि, और ओस् । अतः इनके परे होने पर उपर्युक्त शब्दों के स्थान पर अनङ् होगा ।

अनङ् होगा। 'अनङ्' में ङकार इत्संज्ञक है और नकारोत्तरवर्ती अकार उच्चारणार्थक। अतः ङित होने के कारण ङिच्च परिभाषा द्वारा यह अङ् के अन्त्य इकार के स्थान पर ही होगा।

उदाहरण के लिए दधि + आ में अजादि तृतीया 'टा' परे होने पर प्रकृतसूत्र से अन्त्य इकार के स्थान पर अनङ् आदेश होकर दधन् + आ' रूप बनेगा।

अल्लोपोऽनः।

अङ्गावयवोऽसर्वनामस्थान-यञादि-स्वादिपरो योऽन, तस्याऽकारस्य लोपः दध्ना। दध्ने। दध्नः 2।

विभाषा ङिश्योः

अङ्गावयवोऽसर्वनामस्थान-यञादि-स्वादिपरो योऽन, तस्याऽकारस्य लोपो वा स्यात् ङिश्योः परयोः। दध्नि, दधनि। शेषं वारिवत्। एवं अस्थि सक्थ्यक्ष्णी। सुधि, सुधिनी। हे सुधे। हे सुधि।